



# साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला

## पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)



**Establishment - 1965**

**Mail Address- [literaturelanguage64@gmail.com](mailto:literaturelanguage64@gmail.com)**

Introduction to the School of Studies in Literature & Languages - Established in 1965, the School of Studies in Literature & Languages has been a center of excellence in linguistic and literary studies for nearly six decades. Under the leadership of Prof. Shail Sharma, the School offers diverse programs, including courses in Linguistics, Hindi, English, Chhattisgarhi, and Sindhi, along with diploma and certificate courses. In a significant recent development, the School has introduced an M.A. in Sindhi Program from the 2024-25 session, building upon the Diploma in Sindhi, which has been offered since May 1, 2019. Additionally, new research project in Hindi is currently underway, reinforcing the School's commitment to language and literary research. To enhance the learning experience, the Language Lab has been upgraded with advanced software, smart boards, and improved amenities, ensuring a more interactive and technology-driven academic environment. With its focus on interdisciplinary learning and research, the School continues to play a vital role in language preservation, literary scholarship, and academic innovation in Chhattisgarh and beyond.

### **Vision-**

- Extensive studies of Linguistics & Languages - English, Hindi, Chhattisgarhi, French, Sindhi.
- Diversified spectrum of Research field : Descriptive, Historical, Social, Cultural, Geographical, Comparative Studies.
- To create a better world driven by technology and rooted in values through enlightened and empowered teachers.

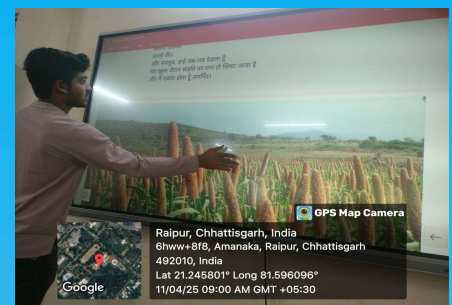
### **Mission-**

- To develop the department as a centre of excellence for higher education at national and international level
- To impart quality education and develop high quality Scholars with ingenuity, creativity, innovation, leadership, ethical values and societal commitment for the integrity and prosperity of our nation.
- To deepen understanding of the students about the greater purpose of life and instill in them the value of self-esteem and self-reliance:
  - By providing world-class education through innovative teaching of the finer points of Literature and Languages.
  - By promoting qualitative research in the field of Language and Literature.
  - By creating environment conducive to overall development of students

## Facilities-

### 1. Wifi/LAN equipped classrooms

### 2. ICT Seminar Hall



### 3. Well furnished Language Lab



### 4. Girls Common Room 5. Research Scholar Room 6. Departmental Library

**Linguistics:** Language is an essential part of human life. A society without language is inconceivable. Language is the most appropriate and efficient medium of communication. As language exists in society, it is a subject of humanities but when it deals with its sounds, structure and meaning it becomes 'Science'. Linguistics covers all those areas that deal with the subjects of language acquisition and language teaching. It also enquires how the change in the modern scenario affects language. The School has produced 5 D. Litt., 103 Ph.D., & 316 M.Phil. in Linguistics till date. Currently the department has 09 research scholars pursuing Ph.D.

**Diploma/Certificate Courses:** Along with the research activities and P.G. courses, Diploma and Certificate courses are also a part of the curriculum. Diploma in European and Asian Languages includes teaching of English and French. The purpose of this program is to augment proficiency of students in English and foreign languages. In present scenario there is a growing demand of people with working knowledge in foreign languages in different professions. The department has produced many Diploma holders in Phonetics and Indian Languages, English, French, Russian, German, Telugu, Hindi, Urdu and Arabic till date.

**English:** Since its inception in 1965 the department had been offering Post Graduate programme in Linguistics only. In the due course of time, a need and growing demand for the integration of English in the curriculum was realised. This lacuna was filled with the commencement of M.A. (English) in 1991 and M.Phil. (English) in 1994. The courses in English have achieved remarkable success. The School has produced 20 Ph.D. and 280 M.Phil. till date. The School continues to impart its share in the development of Chhattisgarh state by paving the way for success and achievement of aspirations and goals in all fields. Currently the department has 06 research scholars pursuing Ph.D.

**हिंदी - साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला** हिंदी के अध्ययन एवं अध्यापन हेतु राज्य की प्रतिष्ठित अध्ययनशाला में विनोद कुमार शुक्ल, निर्मल वर्मा, विद्यानिवास मिश्र, अशोक वाजपेयी, पुरुषोत्तम अग्रवाल, प्रो. शिवकुमार श्रीवास्तव, प्रो. मोहन जैसे हिंदी के मूर्धन्य साहित्यकारों एवं ओजस्वी वक्ताओं के व्याख्यान से इस अध्ययनशाला की गरिमा में श्रवद्धि हुई। स्थापना के बाद से ही हिंदी को सहज सरल बनाने एवं विस्तार देने की दिशा में अध्ययनशाला का उत्तरोत्तर प्रयास रहा है। विद्यार्थियों को नेट, सेट, एवं जे.आर.एफ. के लिए तैयार करने, समय की मांग के अनुरूप राजभाषा प्रशिक्षण, प्रयोजनमूलक हिंदी, भारतीय साहित्य, लोक साहित्य का पाठ्यक्रम में समावेश कर भाषा को विविध क्षेत्रों में परिभाषित करना भी उद्देश्य रहा है। मध्यकालीन, ऐतिहासिक, आधुनिक हिंदी साहित्य, लोक साहित्य, काव्यशास्त्र का तुलनात्मक तथा ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक परिवेश में शोध-कार्य अध्ययनशाला का ध्येय है। विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों की जिज्ञासा में वृद्धि, उनके अध्ययन को गुरुता प्रदान करने के साथ ही शिक्षकों के शिक्षण-कौशल एवं विचारों की अभिव्यक्ति के लिए अध्ययनशाला में समय-समय पर परिसंवाद, संगोष्ठी, सम्मेलन एवं अन्य साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता रहा है। हिंदी भाषा एवं साहित्य को बहुआयामी रूप देने के साथ ही विद्यार्थियों में सकारात्मक सोच एवं जागरूकता लाने तथा क्षेत्र की लोक-कलाओं को जीवंत बनाए रखने की दिशा में इस अध्ययनशाला का विशेष योगदान रहा है। सत्र 1998-99 से एम. ए. (हिंदी) की एवं 2002-03 से एम. फिल. (हिंदी) का अध्यापन प्रारंभ हुआ। इस अध्ययनशाला से 1 डी. लिट्., 44 पी-एच.डी., एवं 140 एम. फिल. हो चुके हैं। वर्ष 2004 से हिंदी में पी-एच.डी. की उपाधि प्रदान किए जाने की शुरुआत हुई। वर्ष 2010 में डी. लिट्. की उपाधि प्रदान की गई। यहाँ एम. ए. में 20 विद्यार्थियों के अध्ययन की सुविधा है। वर्तमान में यहाँ 13 शोधार्थी हिंदी साहित्य के विविध क्षेत्रों में शोध कार्य कर रहे हैं।

**छत्तीसगढ़ी -** छत्तीसगढ़ प्रदेश की मातृभाषा छत्तीसगढ़ी है। इस समृद्ध भाषा का पहला व्याकरण सन् 1885 में लिखा गया। छत्तीसगढ़ प्रदेश के अस्तित्व में आने के बाद 28 नवंबर 2007 को छत्तीसगढ़ी भाषा को राजभाषा घोषित किया गया। छत्तीसगढ़ी भाषा, साहित्य, और संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन के उद्देश्य सन् 2013 में छत्तीसगढ़ी में एम. ए. पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया। 40 सीटों के साथ यह पाठ्यक्रम लगातार ग्यारह वर्षों से सफलतापूर्वक संचालित है। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत छत्तीसगढ़ी साहित्य के अध्ययन के साथ-साथ इस भाषा के विकास एवं आगामी प्रयोग एवं अनुवाद के माध्यम से इसे समृद्ध करने का प्रयास किया जा रहा है। इन ग्यारह वर्षों में 445 छात्रों को एम. ए. की उपाधि प्राप्त हो चुकी है।

**संत शदाराम साहिब सिंधी अध्ययन केंद्र -** संत शदाराम साहिब सिंधी अध्ययन केंद्र की स्थापना 1 मई 2019 को हुई। यहाँ सत्र 2020-2021 से डिप्लोमा इन नेशनल लैंग्वेज: सिंधी का कोर्स प्रारंभ हो गया है। इन पाँच वर्षों में 139 विद्यार्थियों को पी.जी.डिप्लोमा की उपाधि प्राप्त हो चुकी है।



Programme offered	Seats	Programme offered	Seats
M.A. (Linguistics)	20	Ph.D. (Linguistics)	as per university norms
M.A. (English)	30	Ph.D. (Hindi)	as per university norms
M.A. (Hindi)	20	Ph.D. (English)	as per university norms
M.A. (Chhattisgarhi)	40	D.Lit. (Linguistics)	as per university norms
M.A. (Sindhi)	20	D.Lit (Hindi)	as per university norms
Diploma in European and Asian Languages-English	30	Certificate course in Translation	30
Diploma in European and Asian Languages-French	30	Diploma in National Languages-Sindhi	30

S. No.	INVESTIGATOR	PROJECT TOPIC	FUNDING AGENCY	FUNDING AMOUNT (INR)	PERIOD
01	Prof. Madhulata Bara (PI)	समकालीन परिप्रेक्ष्य में माडिया जनजाति का शिल्पकला और लोकपरंपराओं की चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ (छत्तीसगढ़ के दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)	ICSSR, नई दिल्ली (बृहद शोध परियोजना )	35,00000.00 (पैंतीस लाख रुपये)	1 April 2024 to Till Date
02	Dr. Purohit Kumar Sori (Co-Investigator)				

## Teaching Faculty



**Prof. Shail Sharma**



**Prof. Madhulata Bara  
Head**

## Guest Faculty



**Dr. Mrinalini  
Karmoker**



**Dr. Sonal  
Mishra**



**Dr. Kaustubh Mani  
Dwivedi**



**Dr. Kumudini  
Ghritlahare**



**Dr. Baratu  
Ram Dhruw**



**Dr. Vibhasha  
Mishra**



**Dr. Sharda  
Singh**



**Dr. Abheepsa  
Patel**



**Satyajeet Singh**

## Non Teaching Staff



**Shakuntala  
Manhare**



**Sumit Tandi**



**Yogesh Yadav**

विभाग अध्ययन शाला में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी	Date & Year
बैंगानी भाषा सम्मेलन, साहित्य अकादमी नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित	23-24.08.2024
छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं लोकभाषाएँ	23-24.08.2024
"National Education Policy: Challenges Solution & Contribution of Indian Language, especially Sindhi"	6&7 July 2024
छत्तीसगढ़ी भाषा, संस्कृति अउ पत्रकारिता	21-23.02.2023
One Day National Seminar (Hemu Kalani Janam Shatabdi Samaroh)	23.09.2022
छत्तीसगढ़ी साहित्य, लोक जीवन अउ मीडिया	29-30.11.2021
Language, Literature & Contemporary Time	29-30.07.2020
हिंदी साहित्य और गाँधीवाद	22-24.10.2019
भाषा, साहित्य और भाषा-विज्ञान	21-22.09.2019
Organization of National Seminar on the Occasion of National Education Day	11.11.2019



बैंगानी भाषा सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए श्री माधव कौशिक, अध्यक्ष, साहित्य अकादमी



श्री के श्रीनिवास राव, सचिव, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली का स्वागत करते हुए कुलपति महोदय, 23-24 Aug.2024



बैंगा लोक कलाकार



संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए प्रो. मोहन, नई दिल्ली एवं प्रो. राजेंद्र मिश्र रायपुर



भारतीय भाषा सम्मेलन को संबोधित करते हुए विधानसभा अध्यक्ष माननीय डॉ.रमन सिंह जी



छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस में मंचस्थ अतिथिगण



प्रसिद्ध हास्य कवि पद्मश्री डॉ.सुरेंद्र दुबे जी का स्वागत करते हुए कुलपति महोदय



डॉ. पवन भगवतल प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ 04 दिसम्बर , 2020



डॉ. परमलाल अहिरवाल प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा 30 दिसम्बर, 2020

रायपुर 05-12-2024

माटी, मातृ भाषा और मातृभूमि का सदैव सम्मान करें: प्रो. सच्चिदानंद

प्रो. सच्चिदानंद ने 'माटी, मातृ भाषा और मातृभूमि का सदैव सम्मान करें' शीर्षक के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया। उन्होंने मातृभाषा की महत्ता और मातृभूमि के प्रति हमारे अनेकानेक कर्तव्यों का उद्घोष किया।

शिववि: प्रोफेसर करेंगे बस्तर की लोककला व परंपराओं पर रिसर्च

शिल्पकला और शिल्पकारों पर करेंगे रिसर्च

प्रो. सचिन कुमार ने बस्तर की लोककला और परंपराओं पर रिसर्च करने का फैसला किया है। उन्होंने बस्तर की लोककला और परंपराओं पर रिसर्च करने का फैसला किया है।

समग्र इवेंट

अंग्रेजी हमें पैकेज दे सकती है लेकिन संस्कार मातृभाषा

अंग्रेजी हमें पैकेज दे सकती है लेकिन संस्कार मातृभाषा। यह कार्यक्रम मातृभाषा के महत्व और संस्कारों के प्रति हमारे अनेकानेक कर्तव्यों का उद्घोष किया।